B.A. I हिन्दी प्रतिष्ठा के छात्रों हेतु

उपन्यासकार भगवती-चरण वर्मा : जीवन परिचय

डॉ० सतीश चन्द्र पाठक
हिन्दी विभाग
एस० एस० कॉलेज, जहानाबाद

यद्यपि साहित्यकृति और साहित्यकार में अत्यन्त सम्बन्ध है फिर भी मैथ्यू आर्नाल्ड ने कहा है कि साहित्य से साहित्यकार जितना पृथक होगा, वह साहित्य उतना ही महान होगा। इस कथन के आलोक में तो साहित्यिक कृति का ही विवेचन विश्लेषण अपेक्षित है साहित्यकार का नहीं। फिर भी साहित्यकार का जीवनवृत्त हमें उनके द्वारा निर्मित साहित्य को अनुशासित करने का एक आधार अवश्य प्रदान करता है। अतः साहित्य और साहित्यकार दोनों अन्योन्याश्रित हैं इसी सन्दर्भ में साहित्यकार के जीवनवृत्त से परिचित होना अनिवार्य है।

भगवती चरण वर्मा का जन्म उत्तरप्रदेश के उन्नाव जिले के शफीपुर गाँव में 30 अगस्त 1903 को हुआ था। इनके पिता का नाम देवी-चरण जी था। इन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से बी०ए० की परीक्षा पास की तत्पश्चात् इन्होंने वहीं से एल०एल०बी० की डिग्री ली। एल०एल०बी० डिग्री लेने का स्पष्ट उद्देश्य वकालत करना था। किन्तु इस पेशे में ये जाने को राजी न हुए। साहित्य का क्षेत्र इन्हें आकृष्ट कर रहा था। इन्होंने साहित्यसृजन से जुड़ने का निर्णय किया और इनका पहला उपन्यास 'पतन' 1928 में प्रकाशित हुआ। मात्र पच्चीस वर्ष की आयु में इन्होंने साहित्य जगत में अपनी उपस्थिति दर्ज करवायी। इसके बाद

1934 में इनका प्रसिद्ध एवं बहुचर्चित उपन्यास 'चित्रलेखा' प्रकाशित हुआ। जीवन की चिरन्तन समस्या पर केन्द्रित चित्रलेखा उपन्यास ने इन्हें न केवल हिन्दी उपन्यास साहित्य में स्थापित कर दिया वरन बहुचर्चित भी बना दिया। इस उपन्यास से इन्हें प्रसिद्धि तो मिली ही अर्थ की भी प्राप्ति हुयी। इसके बाद ये बम्बई चले गये जहाँ इन्होंने फिल्मी पत्रकारिता में हाथ आजमाये। पत्रकारिता के साथ-साथ उपन्यासलेखन का कार्य भी चलता रहा। 1946 में इनका एक और बहुचर्चित उपन्यास 'टेढ़े मेढ़े रास्ते' का प्रकाशन हुआ। इसके बाद इन्होंने पीछे मुड़कर नहीं देखा। अपने खिलौने, भूले बिसरे चित्र, वह फिर नहीं आयी, सामर्थ्य और सीमा, रेखा, सीधी सच्ची बातें, जैसे श्रेष्ठ उपन्यासों के प्रकाशन ने इन्हें साहित्यिक ऊँचाई प्रदान की। साहित्य जगत में समादृत इनके उपन्यास हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि हैं। 'चित्रलेखा' उपन्यास तो इतना प्रसिद्ध हुआ कि इसपर दो-दो फिल्में बनी और प्रसिद्ध हुयीं। वैसे ही 'भूले बिसरे चित्र' उपन्यास पर साहित्य अकादमी पुरस्कार से पुरस्कृत किए गये।

इन्होंने ◘ फिल्मों की पटकथा और संवाद भी लिखे, 'नवजीवन' नामक पत्रिका का संपादन किया तथा काव्य संकलन भी प्रकाशित किया। इनकी प्रतिभा बहुमुखी थी। कविता, पत्रकारिता, उपन्यास, कहानी, निबन्ध जैसे क्षेत्रों में इन्होंने नये कीर्तिमान स्थापित किए। यही कारण था कि भारत सरकार ने इन्हें 'पद्मभूषण' से अलंकृत किया। इन्हें अपनी साहित्यिक सेवाओं के लिए राष्ट्रपति ने राज्यसभा की मानद सदस्यता प्रदान की। सच्चे अर्थों में भगवती चरण वर्मा हिन्दी साहित्य के जाज्वल्यमान नक्षत्र थे जिनकी आभा हिन्दी के साहित्याकाश में कभी मलीन नहीं होगी। 5 अक्टूबर 1981 को इनका निधन हो गया।